

# नीला प्याला

अरकादी गैदार

# नीला प्याला

अरकादी गैदार

आवरण एवं रेखांकन : रामबाबू

अनुराग ट्रस्ट

ISBN 978-81-89719-03-6

मूल्य : 40 रुपये

पहला संस्करण : जनवरी, 2010

**प्रकाशक**

***अनुराग ट्रस्ट***

डी-68, निरालानगर
लखनऊ-226020

टाइपसेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फ़ाउण्डेशन
मुद्रक : क्रिएटिव प्रिण्टर्स, 628/एस-28, शक्तिनगर, लखनऊ

---

**Neela Pyala,** *Story by* ***Arkadi Gaidar***

उस वक्त मेरी उम्र बत्तीस साल की थी। मारूस्या उनतीस वर्ष की और हमारी बेटी स्वेत्लाना साढ़े छः वर्ष की थी।

उस साल मेरी छुट्टियाँ सिर्फ़ गर्मियों के अन्त में शुरू हुई। सो हमने गर्मियों के आख़िरी दिन देहात में बिताने के लिए मास्को से थोड़ी ही दूर पर एक बंगला किराये पर ले लिया।

स्वेत्लाना और मैंने मछली पकड़ने, तैरने और जंगल में अखरोट और कुकुरमुत्ते जमा करने के मंसूबे बनाये थे। लेकिन पता चला कि हमें पहले आँगन में झाड़ू देना है, टूटी-फूटी बाड़ की मरम्मत करनी है और अलगनी के लिए खूँटियाँ और कीलें ठोंकनी हैं।

इन सब कामों से हमारा मन जल्दी ही ऊब गया, लेकिन मारूस्या हमारे और अपने लिए कहीं न कहीं से नये-नये काम सोच निकालती थी।

तीसरे दिन की शाम तक कहीं हम इन कामों से निबट पाये। इसके बाद, हम तीनों घूमने के लिए बाहर जाने ही वाले थे कि मारूस्या का एक मित्र कहीं से आ टपका – वह ध्रुव प्रदेश का एक विमान-चालक था।

वे दोनों बाग़ में चेरी के पेड़ के नीचे बहुत देर तक बैठे रहे। स्वेत्लाना और मैं आँगन वाले सायबान में चले गये और चाकू से लकड़ी छीलकर एक फिरकी बनाने लगे।

जब अँधेरा छा गया तो मारूस्या ने स्वेत्लाना को पुकारा और दूध पीकर सो जाने को कहा और खुद विमान-चालक को छोड़ने रेलवे स्टेशन की तरफ़ चल दी।

मुझे मारूस्या के बिना फीका-फीका-सा लगने लगा और स्वेत्लाना भी ख़ाली घर में अकेली नहीं सोचा चाहती थी।

इसलिए हमने रसोई से एक प्याला आटा निकाला और उसमें उबलता पानी डालकर लेई बनायी।

फिर अपनी फिरकी पर हमने रंगीन काग़ज़ चिपकाकर उसे अच्छी तरह बराबर

किया और गर्द-भरी अटारी से होते हुए छत पर चढ़ गये।

हम मज़े से छत पर बैठ गये। वहाँ से हमें अपने पड़ोसी का बाग़ नज़र आ रहा था। ओसारे के निकट रखे हुए समोवार से भाग निकल रही थी और ओसारे में स्वयं हमारा पड़ोसी विराजमान था। उसके इर्दगिर्द लड़के-लड़कियों का एक छोटा-मोटा हुजूम खड़ा था, जिन्हें वह अपना बालालाइका बजाकर सुना रहा था। उसका एक पैर ख़राब था और वह बूढ़ा आदमी था।

सहसा, एक बुढ़िया कमर झुकाये, बड़बड़ाती हुई नंगे पाँव अन्दर से निकली। लड़के-लड़कियों को उसने भगा दिया, बूढ़े को डाँटा-फटकारा और एक झाड़न लेकर ज़ोर-शोर से समोवार को धौंकने लगी ताकि पानी जल्दी उबल जाये।

हम हँस पड़े। सोच अब हवा चलेगी और हमारी तेज़ फिरकी नाच उठेगी। तब चारों तरफ़ से लड़के-लड़कियाँ दौड़कर हमारे घर आ जायेंगे। फिर हम भी अकेले नहीं रहेंगे।

कल के लिए हम कुछ और सोच निकालेंगे।

अपने बाग़ में सीले हुए तहख़ाने के पास एक मेढ़क रहता है। हम उसके लिए एक गहरा-सा गढ़ा खोद देंगे।

या हम मारूस्या से मज़बूत धागा माँग लेंगे और पतंग उड़ायेंगे जो चारे की कोठरी की छत से भी ऊँची उड़ेगी, सनोबर के पीले पेड़ों से भी ऊँची, बल्कि उस बाज़ से भी ज़्यादा ऊँची उड़ेगी जो दिन भर दूर आकाश पर से हमारी मकान-मालकिन के चूज़ों और छोटे-छोटे खरगोशों को घूरा करता है।

या कल सबेरे हम एक नाव लेकर निकल जायेंगे। मैं डांड पकड़ लूँगा, मारूस्या पतवार थाम लेगी और स्वेत्लाना यात्री होगी और तब हम उधर नाव खेकर ले जायेंगे जहाँ, सुनते हैं, बहुत बड़ा जंगल है और नदी के किनारे दो बर्च के खोखले पेड़ हैं। पड़ोस के घर में जो लड़की रहती है, कल ही उसे वहाँ तीन बड़े अच्छे कुकुरमुत्ते मिले थे। लेकिन दुख की बात है कि उनमें कीड़े पड़े हुए थे।

सहसा मेरी आस्तीन खींचकर स्वेत्लाना ने मुझे चौंका दिया :

"पिताजी," वह बोली, "वे देखिये, माँ तो नहीं आ रही हैं? हमें होशियार हो जाना चाहिए। नहीं तो हमें बहुत डाँट पड़ेगी।"

हाँ, हमारी मारूस्या ही पगडण्डी पर बाड़ के किनारे-किनारे चली आ रही थी। हमने सोचा भी नहीं था कि वह इतनी जल्दी लौट आयेगी।

"नीचे झुक जाओ," मैं स्वेत्लाना से बोला, "हो सकता है कि वह हमें न देख पाये।"

लेकिन मारूस्या ने हमें फ़ौरन देख लिया और वहीं से चिल्लायी :

"तुम लोग वहाँ छत पर क्या कर रहे हो, निकम्मो? बाहर ओस पड़ रही है। स्वेत्लाना को कब का सो जाना चाहिए था। मैंने घर से बाहर क़दम निकाला नहीं कि तुम लोग आधी-आधी रात तक ऊधम मचाते रहते हो।"

"मारूस्या," मैं बोला, "हम तो कुछ भी ऊधम नहीं मचा रहे हैं। हम अपनी फिरकी ठोंक रहे हैं। बस अब तीन कीलें ही तो ठोंकनी रह गयी हैं – हमें थोड़ी देर और यहाँ रहने दो।"

"उनको कल ठोंक लेना," मारूस्या ने आज्ञा दी, "अब जल्दी से नीचे उतर आओ। नहीं तो सचमुच मुझे गुस्सा आ जायेगा।"

स्वेत्लाना ने और मैंने एक-दूसरे की ओर देखा। हमने समझ लिया कि अब आयी हमारी शामत। इसलिए हम नीचे उतर आये। लेकिन हम मारूस्या से कुछ बिगड़े-बिगड़े से थे।

मारूस्या स्वेत्लाना के लिए स्टेशन से एक बड़ा-सा सेब लायी थी और मेरे लिए तम्बाकू का एक पैकेट, फिर भी हमारी त्योरी चढ़ी ही रही।

और हम इसी तरह रूठे हुए सो गये।

दूसरे दिन एक और पचड़ा खड़ा हो गया। ज्यों ही हमारी आँख खुली, मारूस्या हमारे पास आयी और बोली :

"शरारतियो, भलाई इसी में है कि क़बूल कर लो! बोलो – रसोई में मेरा नीला प्याला किसने तोड़ा?"

मैंने तो तोड़ा नहीं था। और स्वेत्लाना ने कहा कि उसने भी नहीं तोड़ा। हमने एक दूसरे को देखा। हमने सोचा – इस समय मारूस्या सचमुच हमारे साथ ज़्यादती कर रही है।

लेकिन मारूस्या को विश्वास न हुआ।

"प्यालों में जान नहीं होती," वह बोली, "उनकी टाँगें भी नहीं होतीं जो वे उछलकर ज़मीन पर आ जायें। और कल तो तुम दोनों के अलावा कोई रसोई में गया भी नहीं।



प्याल तुम्हीं ने तोड़ा है और अब अपना क़सूर भी नहीं मानते। तुम्हें शर्म आनी चाहिए, साथियो!"

नाश्ता करने के बाद मारूस्या ने कपड़े बदले और शहर चल दी। स्वेत्लाना और मैं वहीं उदास बैठे सोचते रहे।

वाह, अच्छी नाव की सैर रही!

सूरज खिड़कियों से झाँक रहा था। गोरैया यहाँ-वहाँ कंकरीले रास्तों पर फुदक रही थीं। चूज़े खपचियों की बाड़ में से आर-पार आ-जा रहे थे। फिर भी हम उदास थे।

"अजीब बात है," मैं बोला, "कल हमको छत से खदेड़ा गया। कुछ दिन पहले मिट्टी के तेल का ख़ाली डिब्बा हमसे छीन लिया गया। और अब हमको एक पुराना नीला प्याला तोड़ने पर डाँट पिलायी जा रही है – प्याला जो हमने तोड़ा ही नहीं। यह भी कोई ज़िन्दगी है!"

"स्वेत्लाना, जानती हो अब हम क्या करेंगे? तुम अपना गुलाबी फ्राक पहन लो। मैं अपना सफ़री थैला चूल्हे के पीछे से ले आता हूँ। तुम अपना सेब और मेरी तम्बाकू की पुड़िया उसमें डाल लेना। एक दियासलाई की डिबिया, एक चाकू और एक डबलरोटी भी उसमें डालकर हम यह घर छोड़ देंगे। बस, घूमते-फिरते हम निकल चलेंगे, जहाँ भी हमारी टाँगें हमें ले जायें।"

स्वेत्लाना क्षण भर सोचती रही। फिर बोली :

"और आपकी टाँगें कहाँ ले जायेंगी आपको?"

"वे मुझे सीधे उस पीले चरागाह तक ले जायेंगे, जिसे तुम खिड़की से देख सकती हो, जहाँ हमारी मकान-मालकिन की गाय चर रही है। और मैं जानता हूँ कि उस चरागाह से आगे एक तालाब है बत्तखों का, और उस तालाब के आगे एक पनचक्की है और उससे भी आगे है बर्च के पेड़ों का एक कुंज। और यह कुंज एक पहाड़ी पर है। लेकिन मुझे नहीं मालूम इस पहाड़ी के परे क्या है।"

"अच्छा," स्वेत्लाना राज़ी हो गयी, "हम रोटी और सेब और तम्बाकू ले चलेंगे। लेकिन पिताजी, आप एक बड़ी-सी छड़ी भी साथ ले चलिये, क्योंकि मैंने सुना है कि उस रास्ते पर पोल्कान नाम का एक भयानक कुत्ता रहता है। और लड़कों ने मुझे बताया है कि उसने एक आदमी को इतनी बुरी तरह काटा कि वह मरते-मरते बचा।"

हमने सभी आवश्यक चीज़ें अपने सफ़री थैले में भर लीं। पाँचों खिड़कियों को बन्द

किया, दोनों दरवाज़ों पर ताले जड़े और चाभी नीचे खिसका दी।

"अलविदा, मारूस्या! अब जो जी चाहे, समझो। लेकिन हमने तुम्हारा वह प्याला नहीं तोड़ा।"

फाटक के बाहर ही दूधवाली से हमारी भेंट हो गयी।

"दूध तो नहीं चाहिए तुम्हें?" उसने पूछा।

"नहीं, दादी, हमें और किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं।"

"लेकिन मेरा यह दूध बहुत ही अच्छा है। ताज़ा है। मेरी अपनी गाय का है," दूध वाली बुरा मान गयी, "जब तुम लौटोगे तो पछताओगे।"

अपनी ठण्डी बाल्टियों को खनकाती हुई वह आगे बढ़ गयी। उसको क्या मालूम था कि हम दूर जा रहे हैं, बहुत दूर और शायद अब कभी वापस न लौटेंगे।

और हाँ, किसी को पता लगता भी कैसे! धूप में सँवलाया हुआ एक लड़का साइकिल पर पास से निकल गया। एक मोटा आदमी निकर पहने और मुँह में पाइप दबाये हुये धीरे-धीरे टहलता हुआ पास से गुज़रा। शायद वह जंगल की ओर जा रहा था कुकुरमुत्ते जमा करने। सड़क पर एक लड़की जा रही थी, जिसके सुनहले बाल गीले थे, अभी-अभी तैरकर लौट रही थी, लेकिन हमें अपनी जान-पहचानवाला कोई आदमी नहीं मिला।

हम कुछ शाक-सब्जी के बग़ीचों में से जाते हुये एक चरागाह पर पहुँच गये जो पीले-पीले फूलों से ढँका हुई बिल्कुल पीला दिखायी दे रहा था। वहाँ हमने अपने जूते उतार दिये। चरागाह के बीच गर्म-गर्म रास्ते पर चलते हुये हम पनचक्की की ओर नंगे पाँव जाने लगे।

सहसा, हमने किसी को अपनी ओर बहुत तेज़ी से भागकर आते हुये देखा। वह लगभग दोहरा हुआ जा रहा था; सरपत की झाड़ियों के पीछे से उस पर मिट्टी के ढेले बरस रहे थे।

हमें यह बड़ा अजीब लगा। इसका क्या मतलब हो सकता है? स्वेत्लाना की नज़र बड़ी पैनी है। वह रुक गयी और बोली :

"मैं जानती हूँ, यह कौन भागा आ रहा है। वह सान्का कार्याकिन है – वह एक छोटा-सा लड़का है, वही जो उस मकान के पास रहता है जिसमें टमाटर लगे हैं, जिस

बग़ीचे में किसी के सुअर घुस आये थे। कल वह किसी की बकरी पर सवार होकर हमारे मकान के सामने से गुज़रा था। याद है?"

सान्का हमारे पास पहुँचकर रुक गया और अपने हाथ के सूती थैले से आँसू पोंछने लगा।

"सान्का, तुम इस तरह क्यों भागे जा रहे हो? झाड़ियों से मिट्‌टी के ढेले तुम्हारे ऊपर क्यों बरसाये जा रहे हैं?" हमने पूछा।

दूसरी ओर मुँह फेरकर सान्का बोला :

"दादी माँ ने मुझे सामूहिक फ़ार्म की दूकान पर से नमक लाने के लिए भेजा था। लेकिन वह जो पायनियर पाश्का बुकामाशकिन है, वहाँ पनचक्की के पास बैठा है और मुझे पीटना चाहता है।"

स्वेत्लाना ने उसकी ओर देखा। हद हो गयी!

क्या सोवियत भूमि में ऐसा कोई क़ानून है कि जब कोई आदमी भागकर सामूहिक फार्म की दूकान से नमक लाने जा रहा हो और जब उसे सिर्फ़ अपने काम से काम हो, तो बिना वजह कोई उसको पीट दे?

"सान्का, चलो हमारे साथ," स्वेत्लाना बोली, "डरो नहीं। हम तुम्हारे ही रास्ते से जा रहे हैं और हम तुम्हारी मदद करेंगे।"

हम तीनों सरपत की घनी झाड़ियों के बीच चल पड़े।

"उधर, वह रहा पाश्का बुकामाशकिन," सान्का ने पीछे खिसकते हुए कहा।

हमारे सामने चक्की थी। पास ही गाड़ी खड़ी थी और उसके नीचे एक झबरा पिल्ला लेटा हुआ था जिसकी खाल में गोखरू चिमटे हुये थे। पिल्ले की एक आँख खुली थी और वह गोरैयों को घूर रहा था जो रेत पर बिखरे गेहूँ के दाने चुगने में लगी हुई थीं। और उधर रेत के ढेर पर पाश्का बुकामाशकिन बैठा था – क़मीज़ उतारे नंगधड़ंग बैठा खीरा खा रहा था।

हमको देखकर पाश्का घबराया नहीं। खीरे का एक टुकड़ा पिल्ले को फेंककर, सबकी निगाह बचाते हुये वह बोला :

"हुश्श, शारिक, हुश्श! यह आ रहा है नम्बरी फ़ासिस्ट, ह्वाइट गार्ड सान्का! ज़रा ठहर कमबख़्त फ़ासिस्ट! हम तुझे अभी मज़ा चखाये देते हैं!"

और पाश्का ने ऐसे सधे हुये ढंग से थूका कि थूक दूर रेत पर जाकर गिरा। झबरा

पिल्ला गुर्राया। गोरैया डरकर शोर मचाती हुई पेड़ पर उड़ गयीं। लेकिन इन शब्दों को सुनकर स्वेत्लाना और मैं पाश्का के और नज़दीक आ गये।

"रुको, पाश्का," मैं बोला, "हो सकता है कि तुम्हें ग़लतफ़हमी हो। वह न फ़ासिस्ट है और न ह्वाइट गार्ड। वह सान्का कार्याकिन है। वह उस मकान के पास रहता है, जिसके टमाटर के बग़ीचे में एक दिन किसी के सुअर घुस आये थे।"

"नहीं, मैं कहता हूँ वह ह्वाइट गार्ड है," पाश्का ने ज़िद पकड़ते हुए कहा। "यदि आपको मुझ पर विश्वास न हो तो मैं उसकी सारी कहानी सुना सकता हूँ।"

स्वेत्लाना और मैं सान्का की पूरी कहानी सुनना चाहते ही थे। इसलिए हम पाश्का के सामने लकड़ी के कुन्दों के ढेर पर बैठ गये। पिल्ला हमारे पैरों के पास ही घास पर बैठ गया। लेकिन सान्का न बैठा। वह गाड़ी के पीछे की तरफ़ जाकर गुस्से में चिल्लाया :

"अच्छा, अच्छा बता दो, मगर सारी कहानी सुनाना। मेरे सिर पर कैसे चोट आयी थी, यह भी बताना। तुम समझते हो कि मुझे दर्द नहीं हुआ था? तुम्हें लगे तो पता चले।"

"जर्मनी में एक नगर है," पाश्का ने शान्त स्वर में कहा। "उस नगर से फ़ासिस्टों से बचकर एक यहूदी मज़दूर भाग निकला। भागकर वह यहाँ आया। उसके साथ, बेर्था नाम की एक नन्ही लड़की भी आयी। अब वह मज़दूर इस चक्की में काम करता है, और बेर्था हमारे साथ खेलती है। अभी थोड़ी देर पहले वह गाँव में दूध लेने गयी है। हुआ यह कि परसों हम लोग गुल्ली-डण्डा खेल रहे थे – बेर्था, सान्का जो वहाँ छुपा है, गाँव का एक और लड़का और मैं। बेर्था ने जब गुल्ली को डण्डा मारा तो वह सान्का की गुद्दी पर आ लगी..."

"नहीं, मेरे सिर के ठीक ऊपर लगी थी," सान्का ने गाड़ी के पीछे से चिल्लाकर कहा, "और ऐसी लगी थी कि दिन में ही मुझे तारे दिखायी देने लगे थे और वह बेर्था खी-खी-खी-खी हँसती रही थी।"

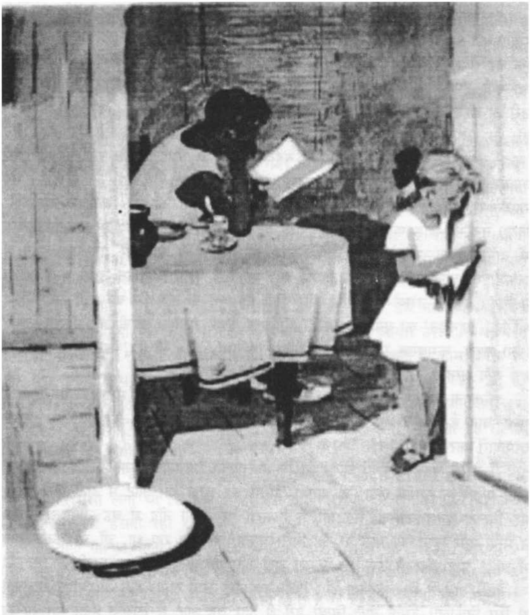
"हाँ तो," पाश्का बोलता रहा, "गुल्ली सान्का के ठीक सिर पर लगी थी। यह उसको घूँसा मारना चाहता था, लेकिन फिर इसका गुस्सा ठण्डा हो गया। इसने एक पत्ता सिर पर चिपका लिया और फिर खेलने लगा। और उसके बाद इसने बेईमानी करना शुरू कर दिया। वह एक क़दम उठाने के बजाय दो क़दम आगे बढ़ आया और..."

"बिल्कुल झूठ!" सान्का गाड़ी के पीछे से उछलकर चिल्लाया, "तुम्हारे कुत्ते ने गुल्ली को नाक से सरका दिया था और वह लुढ़ककर एक क़दम आगे आ गयी थी।"

"लेकिन तुम हमसे खेल रहे थे, कुत्ते से नहीं। तुम गुल्ली को फिर उसी जगह पर रख सकते थे। हाँ, तो इसने गुल्ली फेंकी और बेर्था ने उस पर डण्डा इस ज़ोर से जमाया कि वह मैदान के दूसरे छोर पर बिच्छू-बूटियों की झाड़ियों में जा गिरी। इस पर हमें हँसी आ गयी, लेकिन सान्का गुस्से से पागल हो गया। बिच्छूबूटियों में घुसकर गुल्ली खोजना उसे अच्छा न लगा... वह बाड़ पर चढ़कर चिल्लाने लगा, 'तुम बुद्धू हो, तुम यहूदड़न हो। तुम अपने जर्मनी क्यों नहीं वापस चली जातीं?' बेर्था इतनी रूसी जानती है कि 'बुद्धू' का मतलब समझ ले। लेकिन 'यहूदड़न' वह न समझ सकी। इसलिए मेरे पास आकर उसने मुझसे 'यहूदड़न' का मतलब पूछा। मुझे बताते हुये शर्म आ रही थी। मैंने सान्का से चुप हो जाने को कहा। लेकिन उसने और भी ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया। तब मैंने बाड़ फाँदकर उसका पीछा किया। लेकिन वह झाड़ियों में छुप गया। जब मैं वापस आया, तो बेर्था का डण्डा घास पर पड़ा हुआ था और वह एक कोने में लकड़ी के कुन्दों के ढेर पर बैठी हुई थी। मैंने उसे पुकारा, लेकिन उसने कोई जवाब न दिया। तब मैं उसके पास गया और देखा कि वह रो रही थी। वह खुद समझ गयी थी कि 'यहूदड़न' का क्या मतलब है। मैंने एक पत्थर उठाकर अपनी जेब में रख लिया। 'ज़रा ठहरो, कमबख़्त सान्का, मज़ा चखाऊँगा तुम्हें,' मैंने सोचा, 'यह जर्मनी नहीं है। हम खुद तुम्हारा सारा फ़ासिज़्म निकाल देंगे!'"

स्वेत्लाना और मैंने सान्का की ओर देखा। "नहीं भाई," हमने सोचा, "यह तो बड़ी गन्दी बात है। इसको तो सुनते ही हमें मतली होने लगी। और हम थे कि तुम्हारी तरफ़दारी करने आये थे।"

मैं उससे यह कहने ही वाला था कि पनचक्की घनघनाकर मानो जीवित हो उठी। पानी पहिये को घुमाने लगा, जो काफ़ी आराम कर चुका था। आटे में अटी एक सहमी हुई बिल्ली पनचक्की की खिड़की से निकली पर आधी नींद में वह ठीक से सँभल न पायी और कुत्ते की पीठ पर आ गिरी। कुत्ता, जो ऊँघ रहा था, चीं-चीं करके हवा में उछल पड़ा। बिल्ली एक पेड़ पर जा चढ़ी और गोरैया भागकर पनचक्की की छत पर जा बैठीं। घोड़े ने सिर हिलाया और गाड़ी हचकोले खाने लगी। एक आदमी ने सायबान से सिर निकाला। उसके बाल बिखरे हुये थे और वह आटे में लिबड़ा हुआ था। सान्का



को गाड़ी से भागते हुए उसने देखा और यह समझे बिना कि हुआ क्या था एक लम्बा चाबुक हिलाकर उसको धमकाने लगा :

"अबे ओ – ख़बरदार... फिर कभी ऐसा किया तो तेरी अच्छी मरम्मत कर दूँगा!"

स्वेत्लाना ने ठहाका मारा। फिर उसको बेचारे सान्का पर दया आ गयी जिसको हर कोई पीटना चाहता था।

"पिताजी," वह बोली, "हो सकता है कि आख़िर वह ऐसा फ़ासिस्ट न हो? शायद वह सिर्फ़ मूर्ख हो? क्यों सान्का, तू मूर्ख है न!" उसने दया के भाव से सान्का की ओर देखा।

जवाब में सान्का ने गुस्से से नथुने फुलाये, सिर को झटका दिया और हाँफते हुये कुछ कहने के लिए अपना मुँह खोला। लेकिन वह कह क्या सकता था जबकि सरासर वही दोषी था, बिल्कुल दोषी? कहने-सुनने की कोई बात थी ही नहीं।

ठीक उसी समय पाश्का के पिल्ले ने बिल्ली पर भौंकना बन्द कर दिया। उसने अपना सिर मैदान की ओर घुमाया और कान खड़े कर लिये।

कुंज के उस पार बन्दूक़ चलने की आवाज़ आयी। दूसरी गोली चली। फिर लगातार गोलियाँ चलने लगीं।

"जंग!" पाश्का चिल्लाया।

"हाँ, लड़ाई," मैंने हामी भरी, "यह बन्दूक़ चलने की आवाज़ है। लो अब मशीनगन चलने की आवाज़ भी आने लगी – सुनायी देती है तुम्हें?"

"लेकिन कौन किससे लड़ रहा है?" स्वेत्लाना ने काँपती आवाज़ में पूछा, "क्या युद्ध छिड़ गया है?"

पाश्का सबसे पहले उछलकर खड़ा हो गया और जंगल की ओर भागा – पिल्ला उसके पीछे भागा। स्वेत्लाना को गोद में उठाकर मैं भी उसके पीछे हो लिया।

हम आधा रास्ता भी न चले थे कि हमने पीछे से किसी को चिल्लाते सुना। पीछे मुड़कर क्या देखा कि खेत के बीचोबीच सान्का हमारी ओर भागा आ रहा है।

वह खाइयों और टीलों को फाँदता हुआ आ रहा था और हमारा ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए उसने अपने हाथ ऊपर उठा रखे थे।

"बिल्कुल बकरे जैसा है वह," पाश्का बड़बड़ाया, "वह बुद्धू सिर के ऊपर अपने

हाथों में क्या हिला रहा है?"

"वह बुद्धू नहीं है। वह मेरे सैंडल ला रहा है," स्वेत्लाना खुशी से चिल्लायी, "मैं तो उन्हें लकड़ी के कुन्दों पर भूल आयी थी। अब वह मुझे देने के लिए ला रहा है। पाश्का! तुम उससे सुलह कर लो।"

पाश्का की भौंहें चढ़ गयीं, वह बोला कुछ नहीं। हम सान्का का इन्तज़ार करने लगे। स्वेत्लाना के पीले सैण्डल ले जाने के लिए। अब हम चार जने थे। इसके अलावा पिल्ला भी था। हम कुंज पार करने लगे।

जब हम कुंज के छोर पर आ गये, तो हमने एक मैदान देखा, जो टीलों और झाड़ियों से अटा पड़ा था। नाले के पास एक बकरा खूँटे से बँधा घास टूँग रहा था। उसके गले में पड़ी हुई घण्टी टुनटुना रही थी। एक अकेली चील दूर आकाश में मँडरा रही थी। बस इतना ही था उस मैदान में। और कुछ भी नहीं था।

"कहाँ हो रही है जंग?" स्वेत्लाना ने अधीर होकर पूछा।

"मैं अभी देखकर पता चलाता हूँ," पाश्का एक पेड़ के ठूँठ पर चढ़ते हुए बोला।

वह वहीं देर तक धूप से चौंधियायी हुई आँखों पर अपने हाथ से साया किये देखता रहा। कौन जाने वह क्या देखता रहा, लेकिन इस इन्तज़ार से स्वेत्लाना जल्दी ही ऊब गयी। वह ऊँची-ऊँची घास में खुद घुस गयी, ताकि खुद जंग का पता लगा सके।

"घास काफ़ी ऊँची है और मैं हूँ बहुत ठिगनी," स्वेत्लाना पंजों के बल खड़ी होकर शिकायत करने लगी, "मैं कुछ भी नहीं देख पाती।"

"ज़रा सँभलकर चलो, कहीं तार पर पाँव न पड़ जाये," ऊपर से एक भारी आवाज़ आयी।

पाश्का फ़ौरन ठूँठ से कूद पड़ा। सान्का बड़े अटपटे ढंग से उछलकर एक तरफ़ खड़ा हो गया। स्वेत्लाना भागकर मेरे पास आ गयी और उसने ज़ोर से मेरा हाथ पकड़ लिया।

हम जरा पीछे सरक गये; आँखें ऊपर की तरफ़ उठायीं तो देखा कि लाल सेना का एक सिपाही एक अकेले पेड़ की घनी शाखों में छुपा बैठा है।

उसके पास ही एक टहनी से बन्दूक़ लटक रही थी। एक हाथ में वह टेलीफ़ोन का चोंगा पकड़े हुए था और दूसरे में काली चमकीली दूरबीन लिये वह खाली मैदान के दूसरे छोर की तरफ़ ग़ौर से देख रहा था।

इससे पहले कि हम मुँह से एक शब्द भी निकाल पाते कहीं दूर से तोपों की गड़गड़ाहट सुनायी दी मानो बादल गरजने लगे हों। हमारे पाँवों के नीचे ज़मीन हिल-सी गयी। काली धूल और धुएँ का एक बादल मैदान के आख़िरी छोर के ऊपर छा गया। बौखलाकर बकरा उछल पड़ा और रस्सी तुड़ाकर भागा। चील ने अपने पंख ज़ोर से फड़फड़ाये और दूर आसमान में जाकर उड़ने लगी।

"फ़ासिस्ट पिटे जा रहे हैं!" किसी ने भारी आवाज़ में दोहराया।

अब जाकर हमारी नज़र एक सफ़ेद बालों वाले बूढ़े पर पड़ी जो झाड़ी के पीछे खड़ा था।

उसकी दाढ़ी लम्बी, बाल सफ़ेद, कन्धे चौड़े थे और उसके हाथ में एक भारी गाँठदार डण्डा था। उसके पाँवों के पास एक बड़ा झबरा कुत्ता बैठा था जो दाँत निकाले पाश्का के कुत्ते पर गुर्रा रहा था। शारिक डर के मारे दुम दबाये बैठा था। बूढ़े ने अपने सिर से सीकों की चौड़े पल्लों वाली टोपी उठायी और ज़रा अदब से पहले स्वेत्लाना की ओर झुका और फिर बाक़ी हम सबकी ओर। फिर उसने अपना डण्डा घास पर रखा, जेब से एक पाइप निकाला और तम्बाकू भरकर उसे सुलगाने लगा।

पाइप सुलगाने में उसे बड़ी देर लगी – वह कभी तम्बाकू को अपने अँगूठे से दबाता और कभी उसको कील से ऐसे कुरेदता जैसे कुरेदनी से जलते अंगारों को कुरेद रहा हो।

आखिरकार उसको तसल्ली हुई और तब इतने जोर से वह कश खींचने और धुआँ उड़ाने लगा कि पेड़ पर बैठे हुए लाल सेना के सिपाही बन्दूक़ें लिये खाइयों और झाड़ियों में से, मेंड़ों और टीलों पर से कूद पड़े।

वे दौड़े, कूदे, फाँदे, गिरे और फिर खड़े हो गये। उनकी कतारें बँध गयीं, एक दूसरे से सटकर वे फैल गयीं। फिर चीखता-गरजता सारा दल तूफ़ान की तरह आगे बढ़ने लगा और उन्होंने अपनी संगीनें तानकर एक टीले की चोटी पर धावा बोल दिया जिसका एक भाग अभी तक धूल और धुएँ से घिरा था।

फिर सब कुछ शान्त हो गया। टीले की चोटी पर एक सिगनल देने वाला आया और अपने झण्डे हिलाने लगा – जहाँ हम खड़े थे वहाँ से वह सिपाही खिलौने-सा दिखाई देता था। फिर जोर से बिगुल बज उठा और उसने 'वापस लौटने' की सूचना दी।

पेड़ पर बैठा हुआ सिपाही, जो दुश्मन पर नज़र रखे हुये था, अपने भारी-भरकम

जूतों से कई टहनियाँ तोड़ता हुआ नीचे उतर आया। अपनी चरखी पर टेलीफोन का पतला तार लपेटता हुआ वह भाग निकला।

नक़ली युद्ध समाप्त हुआ।

"यह देखा तुमने?" पाश्का ने सान्का की पसलियों में कुहनी से टहोका देते हुये पूछा, "अब जरा गुल्ली लगने से सिर पर चोट आने की बात करो। यहाँ तो पल भर में तुम फ़ासिस्टों के सिरों का भी सफ़ाया हो सकता है।"

"मैं यह सब क्या सुन रहा हूँ?" दाढ़ी वाले बूढ़े ने हमारे पास आते हुये पूछा, "मैं तो साठ वर्ष का हुआ, लेकिन ऐसा लगता है जैसे मेरा दिमाग़ काम ही नहीं करता। एक भी बात मेरी समझ में न आयी। उधर... उस पहाड़ी की गोद में 'सूर्योदय' नाम का हमारा सामूहिक फ़ार्म है। ये आसपास फैले हुये खेत हमारे हैं। इनमें उगी हुई जौ, बाजरे और गेहूँ की फ़सल भी हमारी है। वहाँ, नदी पर नयी पनचक्की भी हमारी है, और झुरमुट में बनी हुई शहद की मक्खियाँ पालने का छत्ता भी हमारा ही है। और मैं इन सब चीज़ों का बड़ा चौकीदार हूँ। मैंने अपनी ज़िन्दगी में हर तरह के बदमाश देखे हैं। यहाँ तक कि मैंने घोड़े चुराने वालों को भी पकड़ा है। लेकिन मेरी चौकीदारी में जितनी ज़मीन है, उस पर सोवियत सत्ता की स्थापना के समय से आज तक कभी किसी फ़ासिस्ट को मैंने नहीं देखा। बिल्कुल नहीं देखा!... अरे तो तीसमारखाँ सान्का, तू यहाँ तो आ, इधर आ, ज़रा तेरी सूरत तो देखूँ। हाँ, जरा अपने मुँह पर से लार तो पोंछ! जरा अपनी नाक तो साफ़ कर! नहीं तो मुझे तेरे मुँह की तरफ़ देखने से भी डर लगता है।"

बूढ़े ने चुटकी लेते हुये यह बात बड़े इत्मीनान से कही। फिर अपनी घनी भौंहों के नीचे से उसने जिज्ञासा के साथ सान्का की तरफ़ घूरा, जिसकी आँखें आश्चर्य से गोल-गोल हो गयी थीं।

"यह सच नहीं है," अपमान महसूस करते हुए सान्का रोनी आवाज़ में नाक सुड़क-सुड़ककर चिल्लाया, "मैं फ़ासिस्ट नहीं हूँ। मैं तो सिर से पाँव तक पूरा सोवियत हूँ और वह बेर्था भी अब मुझसे नाराज़ नहीं है। कल उसने मेरा सेब आधे से ज़्यादा खा लिया था। अब बोलो? और यह पाश्का सब लड़कों को मेरे ख़िलाफ़ भड़काता फिरता है। वह मुझे डाँटता-फटकारता रहता है और खुद इसने मेरी कमानी छीन ली थी। अगर मैं फ़ासिस्ट हूँ तो मेरी कमानी भी फ़ासिस्ट की है। लेकिन इसने अपने कुत्ते के लिए उससे झूला बना लिया था। मैंने उससे सुलह कर लेने के लिए कहा, लेकिन यह बोला,



'पहले ज़रा तुम्हारी पिटायी हो जाये, तब दोस्ती हो सकती है।' "

"लड़ाई-झगड़े के बिना ही सुलह कर लेनी चाहिए," स्वेत्लाना विश्वास के साथ बोली, "अपनी छोटी उँगलियों को एक-दूसरे में डालकर ज़मीन पर थूककर कहो : 'झगड़े गये उस तरफ़, शान्ति आयी इस तरफ़।' हाँ, तो चलो आओ, अब उँगलियाँ मिलाओ। और साथी चौकीदार, तुम भी अपने इस भयानक कुत्ते को रोक लो कि यह हमारे नन्हे शारिक को न डराये।"

"पोल्कान, हट जाओ," चौकीदार ने हुक्म दिया, "बैठ जाओ! हमारे दोस्तों को तंग मत करो।"

"अच्छा, तो यही है वह! यही है भारी-भरकम पोल्कान झबरा और तेज़ दाँतों वाला!"

स्वेत्लाना कुछ क्षण बिल्कुल चुपचाप खड़ी रही। फिर डरते-डरते क़दम बढ़ाकर वह कुत्ते के पास गयी।

"मैं भी तुम्हारी दोस्त ही हूँ। और तुम्हें दोस्तों को तंग नहीं करना चाहिए!" वह उँगली हिलाते हुये कुत्ते से बोली।

पोल्कान ने स्वेत्लाना की ओर मुँह मोड़ा। उसने देखा कि स्वेत्लाना की आँखें बहुत साफ़ हैं और चमक रही हैं और उसके हाथों से घास और फूलों की महक आ रही है। वह मुस्करा दिया और अपनी दुम हिलाने लगा।

यह देखकर सान्का और पाश्का को ईर्ष्या हुई। वे भी कुत्ते के पास गये और बोले, "हम भी तुम्हारे दोस्त हैं। और तुम्हें दोस्तों को तंग नहीं करना चाहिए!"

पोल्कान को शक-सा हुआ, वह उनको सूँघने लगा। शायद इन शरारती लड़कों से गाजरों की बू आ रही थी जो सामूहिक खेत की सब्ज़ी की क्यारियों में पैदा होती हैं। लेकिन ठीक उसी समय जैसे जान-बूझकर एक नन्हा-सा घोड़े का बच्चा उछलता-कूदता और धूल उड़ाता हुआ सामने से भाग निकला। लड़कों के बारे में कोई राय बनाने से पहले ही पोल्कान को छींक आ गयी। उसने उनको तंग तो नहीं किया, लेकिन दुम भी नहीं हिलायी। न ही उनको उसने थपथपाने दिया।

"अब हमें चल देना चाहिए," मैं चौंककर बोला, "दिन बहुत चढ़ आया है और जल्दी ही दोपहर होने को है। उफ़, गर्मी भी कितनी तेज़ है!"

"अच्छा, सबको सलाम," स्वेत्लाना ने सुरीली आवाज़ में सबसे कहा, "हम फिर

से दूर, बहुत दूर जा रहे हैं।"

"सलाम," लड़के एक स्वर में बोले। अब वे फिर दोस्त बन गये थे। "उस दूर, बहुत दूर जगह से लौटकर एक बार फिर हमसे मिलने आना।"

"सलाम," चौकीदार मुस्कराते हुये बोला, "मैं यह तो नहीं जानता कि तुम लोग कहाँ जा रहे हो और किसलिये जा रहे हो, लेकिन मैं इतना जानता हूँ कि मेरे लिये सबसे बुरी दूर बहुत दूर जगह गाँव का वह पुराना कब्रिस्तान है जो नदी के पास बाईं तरफ़ पड़ता है। और सबसे अच्छी दूर बहुत दूर जगह है झील के परे का सनोबर के पेड़ों का जंगल। वहाँ पहुँचने के लिए तुम दाहिने हाथ मुड़ना। आगे चरागाह और खड्डों में स्थित पत्थर की खानों को लाँघना, फिर झुरमुट के बीच से होकर दलदल के गिर्द जाना। सनोबर के उस जंगल में कुकुरमुत्ते हैं, फूल हैं और रसभरियाँ हैं। और वहाँ नदी के किनारे एक मकान भी है। उसमें मेरी बेटी वालेन्तीना और उसका बेटा फ्योदोर रहते हैं। अगर तुम उस तरफ़ जाओ तो उनसे मेरा प्यार कहना।"

तब उस अजीब बूढ़े ने अपनी टोपी उठाकर सलाम किया और अपने कुत्ते को बुलाने के लिए सीटी बजायी, उसने पाइप से एक ज़ोर का कश खींचा और अपने पीछे धुएँ की एक मोटी-सी लकीर छोड़ता हुआ वह मटर के पीले खेत की ओर चल दिया।

स्वेत्लाना ने मेरी ओर देखा और मैंने उसकी ओर। हमें उस मनहूस पुराने कब्रिस्तान से क्या काम! एक दूसरे के हाथ में हाथ डालकर हम दाहिनी ओर मुड़े और बहुत दूर के सबसे बढ़िया स्थान की तरफ़ चल पड़े।

हमने चरागाह पार की और खड्डों में उतर पड़े।

वहाँ क्या देखते हैं कि लोग बर्फ़ जैसे सफ़ेद पत्थर गहरे काले गड्ढों में से खोद-खोदकर निकाल रहे हैं। पहिये घूम रहे थे और छोटी-छोटी गाड़ियाँ चर्र-मर्र कर रही थीं। इन नन्हीं गाड़ियों को एक दूसरे के बाद भरा जा रहा था और पत्थरों के ढेर के ढेर लगाये जा रहे थे।

ऐसा लगता है कि ज़मीन के नीचे झाँकना चाहती थी। बहुत देर तक वह पेट के बल लेटी रही और एक काले गड्ढे में झाँकती रही। अन्त में जब मैंने टाँगें पकड़कर उसको खींचा तो वह मुझसे बोली कि पहले तो उसको अँधेरे के सिवा वहाँ कुछ भी दिखायी न दिया। बाद में उसने एक काला समुद्र देखा जिसमें कोई चीज़ चल-फिर रही थी शोर करती हुई। शायद वह दो दुमवाला शार्क था जिसकी एक दुम आगे और दूसरी

पीछे की तरफ़ थी। उसको एक बहुत बड़ा अजगर भी दिखायी दिया, तीन सौ पचीस टाँगों वाला और बस एक सुनहरी आँख। और यह भयानक अजगर वहाँ बैठा गरज रहा था।

मैंने स्वेत्लाना पर एक शरारत भरी नज़र डाली और पूछा कि उसने दो चिमनियों वाली नाव, पेड़ पर चढ़ा हुआ एक भूरे रंग का बन्दर और तैरते हुये बर्फ़ के एक तूँदे पर ध्रुव प्रदेश का भालू भी तो देखा होगा।

स्वेत्लाना ने सोचा पल भर के लिए। हाँ, क्यों नहीं; उसने ये सब चीज़ें भी देखी थीं।

मैंने उसके सामने अपनी उँगली हिलायी – "कहीं यह बात उसने अपने मन से तो नहीं गढ़ी थी?"

जवाब में वह ठहाका मारकर हँस पड़ी और अपनी नन्हीं-नन्हीं टाँगों से जितनी तेज़ भाग सकती थी, भाग गयी।

हम चलते ही चले गये। बस, कभी-कभी सुस्ताने और फूल चुनने के लिए ज़रा ठहर जाते। जब फूलों के गुच्छे हाथ में लिये-लिये हम थक जाते तो उनको ज़मीन पर रखकर आगे बढ़ जाते।

मैंने एक गुलदस्ता छकड़े में बैठी हुई एक बुढ़िया की गोद में फेंक दिया। पहले तो बुढ़िया डर गयी और उसने हमें घूँसा दिखाया। लेकिन जब उसने देखा कि गुलदस्ता है तो वह मुस्कुराने लगी और उसने हमारी तरफ़ तीन बड़े-बड़े खीरे फेंक दिये।

हमने खीरे उठा लिये। उनको साफ़ किया और अपने थैले में भर लिया। हम खुशी-खुशी अपनी राह चलने लगे।

थोड़ी ही देर में हम एक गाँव में पहुँचे। यहाँ वे लोग रहते थे जो ज़मीन में हल चलाते हैं और उसमें अनाज, आलू, गोभी, चुक़न्दर आदि बोते हैं और फल और सब्ज़ी के बाग़ों में काम करते हैं।

गाँव के बाद हम क़ब्रों के हरे-हरे टीलों के पास से गुजरे जिनमें ऐसे लोग लेटै हुए हमेशा के लिए विश्राम कर रहे थे, जिन्होंने फ़सल बोना और काम करना ख़त्म कर दिया था।

हमने एक पेड़ भी देखा जिसे बिजली ने जला डाला था।

इसके बाद हमने घोड़ों का एक झुण्ड देखा। हर घोड़ा इतना अच्छा था कि खुद

बुद्योन्नी की सवारी के काम आये।

तभी आकाश काला पड़ गया और हमें चिन्ता हुई। बादल चारों तरफ़ से घिर-घिरकर आ रहे थे। उन्होंने सूरज को घेर लिया और पकड़कर छुपा लिया। लेकिन सूरज भी बड़ा ज़िद्दी था – कभी इस दरार से और कभी उस दरार से झाँकता रहता। अन्त में लड़-भिड़कर इसने अपने लिए रास्ता साफ़ किया और हमारी लम्बी-चौड़ी धरती पर पहले से भी ज़्यादा गर्मी और रोशनी फैल गयी।

हमारा लकड़ी की छतवाला धूसर मकान बहुत पीछे रह गया था।

मारूस्या कब की लौट आयी होगी। उसने हमको ढूँढ़ा होगा – लेकिन हम वहाँ थे कहाँ? अब वह बैठी होगी हमारे इन्तज़ार में – बेचारी मारूस्या!

"पिताजी," आखिर थककर स्वेत्लाना बोली, "अब हमें कहीं बैठ जाना चाहिए और कुछ खाना-पीना चाहिए।"

हमने चारों तरफ़ नज़र डाली और हमें जंगल के बीच एक बहुत सुन्दर खुली जगह नज़र आयी, जैसी सुन्दर खुली जगह कम लोगों को नसीब होती है।

जंगली अखरोट की हरी-भरी डालियाँ सरसराती हुई हमें अपनी ओर बुला रही थीं। चाँदी जैसे सफ़ेद फ़र का पेड़ आकाश की ओर अपना ताज उठाये खड़ा था। और नीले, लाल, आसमानी और बैंगनी रंगों के हज़ारों फूल, जो मई-दिवस के झण्डों से भी ज़्यादा रंगबिरंगे थे, फ़र के पेड़ के इर्दगिर्द चुपचाप खड़े थे।

चिड़ियों तक ने अपना गाना रोक दिया था उस सुन्दर जगह में। इतनी खामोशी थी वहाँ!

लेकिन एक बदतमीज़ कौआ न जाने कहाँ से उड़कर आ गया और एक टहनी पर जमकर बैठ गया; उसने चारों तरफ़ नज़र डाली और यह समझकर कि वह ग़लत जगह आ बैठा है आश्चर्य के मारे काँव-काँव करता हुआ अपने गन्दे सड़े कूड़े के ढेर की तरफ़ उड़ गया।

"स्वेत्लाना, तुम बैठ जाओ और थैले की रखवाली करो। मैं सुराही में पानी भर लाता हूँ। घबराना मत। यहाँ एक ही जानवर रहता है – लम्बे कानोंवाला खरगोश।"

"एक क्या, मैं हज़ार खरगोशों से भी डरने वाली नहीं!" स्वेत्लाना ने बहादुरी से जवाब दिया, "लेकिन फिर भी, पिताजी, जल्दी से जल्दी आ जाइयेगा।"

झरना कुछ ही दूर था। और जब मैं पानी भरकर लौटने लगा तो मुझे स्वेत्लाना की



चिन्ता होने लगी।

लेकिन स्वेत्लाना डरी नहीं थी। और वह रो भी नहीं रही थी। बल्कि वह गा रही थी।

मैं एक झाड़ी के पीछे छुप गया और अपनी मुटल्ली, सुनहले बालों वाली नन्हीं स्वेत्लाना को देखता रहा। अपने कन्धों तक ऊँचे फूलों के ढेर के सामने वह खड़ी थी और यह गीत गा रही थी जो उसने अभी-अभी खुद बनाया था :

आहा... हा!...
हमने नीला प्याला नहीं तोड़ा,
नहीं तोड़ा!
चौकीदार लगा रहा है
अपने खेतों का चक्कर,
लेकिन हमने नहीं चुराये गाजर।
न मैंने लिये, न वह ले गया।
हाँ, सान्का दो एक चुरा ले गया।
आहा... हा!...
खेतों में लाल सेना चली जा रही है,
पड़ोसी शहर से वह आ रही है।
सबसे लाल है लाल सेना,
ढम-ढम, ढम-ढम! टाराटिट... टाराटे!
ये आये बैंड बजाने वाले लड़के,
ये आये हवाई जहाज़ चलाने वाले!
बैण्ड बजाने वाले लड़के
हवाई जहाज़ों में बैठे
आसमान में उड़ते,
और मैं, बैण्ड बजाने वाली लड़की,
बैठी हूँ यहाँ ज़मीन पर नीचे।

ऊँचे-ऊँचे फूल और पौधे चुपचाप गम्भीर बने हुये उसका गीत सुन रहे थे। और

जब उसने गीत समाप्त किया तो उन्होंने अपने सुन्दर सिर हिला दिये।

"यहाँ आओ, छोटी बैण्ड बजाने वाली," मैंने झाड़ी हटाते हुये पुकारा। "मेरे पास ठण्डा पानी, लाल सेब, सफ़ेद डबल रोटी और पीली नानखताइयाँ हैं। इस गीत के लिए तो जो इनाम दिया जाये, कम है।"

स्वेत्लाना कुछ शरमा गयी। उसने अपना सिर हिलाया जैसे मुझ पर नाराज़ हो। उसने अपनी आँखों को सिकोड़ा। ठीक मारूस्या जैसी लग रही थी वह। बोली :

"आप बैठे थे, छिपकर सुन रहे थे! शर्म नहीं आती, प्यारे साथी?"

इसके बाद स्वेत्लाना बिल्कुल ख़ामोश होकर किसी ख़्याल में खो गयी।

खाना खाते-खाते, एक भूरी गोरैया पेड़ की टहनी पर वह फुदकती और चहचहाती रही। उड़ जाने का नाम तक न लेती थी।

"मैं इस गोरैया को जानती हूँ," स्वेत्लाना पूरे विश्वास से बोली, "मैंने इसको तब देखा था जब मम्मी और मैं बग़ीचे में झूला झूल रहे थे। बहुत ऊँचा झुला रही थीं मम्मी मुझे! टी-वी-टी-टुट-टुटे... यह हमारे पीछे-पीछे इतनी दूर क्यों चली आयी?"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है!" मैंने दृढ़ता से जवाब दिया, "यह बिल्कुल दूसरी गोरैया है। तुम ग़लत कह रही हो, स्वेत्लाना। उस गोरैया की पूँछ के पर झड़ गये थे। हमारी मकान-मालकिन की कानी बिल्ली ने नोच लिया था उनको। और वह गोरैया तो इससे मोटी थी। वह गाती भी बिल्कुल दूसरे ही सुर में थी।"

"नहीं, यह वही है!" स्वेत्लाना ने ज़िद पकड़ते हुये कहा, "मैं इसको जानती हूँ। हमारे पीछे-पीछे यह यहाँ तक चली आयी है।"

"ओह, हाँ!" मैंने धीमे उदास स्वर में गाकर कहा, "हमने नीला प्याला नहीं तोड़ा। और हमने फैसला किया है दूर... बहुत दूर... जाने का – हमेशा के लिए।"

भूरी गोरैया गुस्से में चीं-चीं करने लगी। लाखों फूलों में से एक ने भी तो अपना सिर न हिलाया। स्वेत्लाना को गुस्सा आ गया।

"आपकी आवाज़ ही बिल्कुल रूखी है," वह कर्कश स्वर में बोली, "लोग इस तरह नहीं गाते। इस तरह तो भालू गाया करते हैं।"

हमने चुपचाप अपना थैला बन्द कर लिया और उस झुरमुट से चल पड़े। आहा! ख़ुशक़िस्मती से मैंने पहाड़ी की गोद में चमकती हुई एक नदी देखी ठण्डे नीले पानी वाली।

मैंने स्वेत्लाना को अपनी बाँहों में ऊँचा उठा लिया। जब उसकी नज़र रेतीले किनारे और छोटे-छोटे हरियाले टापुओं पर पड़ी तो वह सब कुछ भूल तो गयी। ताली बजाती हुई वह चिल्लायी :

"चलिये नहायें! आहा नहायें, आओ, नहायें!"

एक सीले चरागाह के ठीक बीच से होकर हम चल दिये, ताकि जल्दी पहुँच सकें।

जल्दी ही हम घनी दलदली झाड़ियों के बीच पहुँच गये। वापस कौन मुड़ता अब। इसलिए हमने तय किया कि दलदल के बीच से ही किसी तरह निकल चलेंगे। लेकिन ज्यों-ज्यों हम आते बढ़ते जाते थे, दलदल और भी गाढ़ी और घनी होती जा रही थी।

हमने चक्कर लगाये, कभी हम इधर मुड़े तो कभी उधर मुड़ चले, कभी चरमराते तख़्तों के ऊपर से गुजरे और कभी एक टीले से दूसरे टीले पर कूदते फिरे। जल्दी ही हम भीग गये और कीचड़ से सन गये। लेकिन दलदल से बाहर आने का रास्ता न मिला।

पास ही कहीं, झाड़ियों के परे गायों का एक रेवड़ रँभा रहा था। गड़रिया अपना चाबुक फटकार रहा था और उसका कुत्ता गुस्से से भौंक रहा था। उसने ज़रूर भाँप लिया था कि हम वहाँ पर हैं। लेकिन जहाँ तक हमारी नज़र जा पा रही थी, दलदल के लाल मटीले पानी, सड़ी-गली झाड़ियों और नरकल के सिवा कुछ भी दिखायी न देता था।

स्वेत्लाना के चित्ती-भरे चेहरे पर चिन्ता की बदलियाँ घिर आयीं। वह खामोश निन्दा-भरी नज़रों से बार-बार मेरी ओर मुड़कर देखने लगी। "पिताजी, क्या हो गया है?" मानो वह मुझसे पूछ रही हो, "आप तो इतने बड़े ताक़तवर हैं और फिर भी हमारी यह हालत हो रही है!"

"तुम यहाँ ठहरो और बिल्कुल हिलना मत!" मैंने उसको ज़मीन के एक सूखे टुकड़े पर खड़ा करते हुए कहा।

मैं एक झुरमुट में घुस गया। लेकिन यहाँ भी हरी-हरी कीचड़ और बेशुमार दलदल के बड़े-बड़े फूलों के सिवा कुछ न मिला।

मैं वापस लौट आया। देखा, स्वेत्लाना वहाँ नहीं थी जहाँ मैंने उसको छोड़ा था। वह रास्ता टटोल-टटोलकर मेरी ही ओर आ रही थी। वह झाड़ियों का सहारा लेकर चल रही

थी कि कहीं गिर न पड़े।

"वहीं ठहरो, जहाँ मैं तुम्हें खड़ा कर आया था!" मैं चिल्लाया।

स्वेत्लाना रुक गयी। उसकी आँखें तेज़ी से मिचमिचायीं और उसके होंठ काँपने लगे।

"आप इतने ज़ोर से क्यों चिल्ला रहे हैं?" वह धीमी काँपती आवाज़ में बोली, "उस जगह मेढ़क हैं और मेरे पाँव नंगे हैं। मुझे डर लग रहा है।"

नन्ही स्वेत्लाना की हालत देखकर मेरा दिल रो रहा था, क्योंकि उसे मेरे ही कारण इतनी तकलीफ़ उठानी पड़ रही थी।

"यह लो, पकड़ो इस छड़ी को!" मैं बोला, "बदमाश मेढ़कों को इससे पीट दो! लेकिन अपनी जगह से हिलना मत! हम जल्दी ही इस दलदल से बाहर निकल जायेंगे।"

मैं झुरमुट में वापस चला गया – मुझे अपने आप पर बेहद गुस्सा आ रहा था। यह कैसी बेहूदगी है? इस छोटे-से दलदल का द्नेपर नदी के किनारे उगे हुए बेशुमार सरकण्डों और आख़्रीरका के नरकलों से ढँकी हुई उदास दलदलों से क्या मुक़ाबला – जहाँ हमने व्रांगेल की ह्वाईट गार्ड फ़ौजों का कचूमर निकाला था?

मैं एक टीले से दूसरे टीले पर और एक झाड़ी से दूसरी तक कूद-कूदकर आगे बढ़ने लगा। एक क़दम और बढ़ाया ही था कि मैं कमर तक पानी में डूब गया। दूसरा क़दम जो उठाया तो एक ख़ुश्क ऐस्प का पेड़ कीचड़ में गिर पड़ा। इसके बाद ही एक काई लगा हुआ लट्ठा भी वहाँ आ गिरा। पेड़ का सड़ा हुआ ठूँठ भी वहीं गिर पड़ा। कम से कम खड़े होने के लिए कोई चीज़ तो थी। इसके बाद एक और गढ़ा आया जिसमें पानी भरा था। और आख़िरकार सूखी ज़मीन आ गयी।

मैंने नरकलों को ज़रा हटकर जो देखा तो सामने एक बकरा खड़ा मिला। बेचारा मेरे अचानक सामने आ जाने से डर के मारे उछल पड़ा।

"हैलो!... स्वेत्लाना!" मैं जोर से चिल्लाया, "तुम वहीं खड़ी हो न?"

"हैलो!..." एक महीन और रुआँसी आवाज़ आयी, "मैं वहीं... खड़ी... हूँ!"

आख़िर हम नदी के किनारे पहुँच ही गये। अपने शरीर पर लगे हुये कीचड़ को हमने धो डाला और कपड़ों को पानी में साफ़ कर लिया। उधर वे गरम रेत पर सूखते रहे और हम नदी में नहाते रहे।

हम हँस रहे थे और चमकीले पानी को उछाल-उछालकर फ़व्वारे बना रहे थे, बेचारी मछलियाँ डर के मारे लपककर अपने गहरे ठिकानों में जा छिपीं।

मैंने पानी के अन्दर हाथ डालकर मूँछोंवाले एक काले केकड़े को पानी में बने हुये उसके घर से पकड़कर बाहर निकाला तो वह सहमकर अपनी गोल-गोल आँखें घुमाने लगा और छटपटाने लगा। शायद उसने पहले कभी इतनी तेज़ धूप नहीं देखी थी और न ही शायद उसने स्वेत्लाना जैसे सुनहले बालोंवाली नन्हीं लड़की कभी देखी थी।

केकड़ा शायद घात लगाये था, इसलिए ज्यों ही मौक़ा हाथ लगा, उसने स्वेत्लाना की उँगली कसकर अपने पंजों में पकड़ ली।

स्वेत्लाना के मुँह से एक जोर की चीख निकल गयी और उसने केकड़े को कलहंसों के एक झुण्ड में जोर से फेंक दिया। कलहंस के मोटे-मोटे नादान बच्चे शोर मचाते हुये बिखर गये।

तब एक बूढ़ा भूरे रंग का कलहंस केकड़े के पास क़दम बढ़ाता हुआ आया – उसने तो केकड़े से भी अधिक डरावनी चीजें देखी होंगी। उसने अपना सिर जरा तिरछा किया, केकड़े को एक आँख से निहारा और फिर – 'धड़' – केकड़े पर चोंच मारी।

जी भर तैर लेने के बाद हम धूप खाते रहे और फिर कपड़े पहनकर अपने रास्ते हो लिये।

रास्ते में फिर हमारी भेंट और चीज़ों से हुई – लोगों से, घोड़ों से, गाड़ियों और मशीनों से – यहाँ तक कि एक भूरे रंग की साही से भी। उसको हमने उठा लिया और अपने साथ ले चले। लेकिन उसने हमारी उँगलियों को कोंचना शुरू कर दिया। इसलिए हमने एक ठण्डे पानी के नाले में उसको फेंक दिया।

लेकिन साही सूँ-सूँ करने लगी और तैरकर दूसरे किनारे पर जा पहुँची। उसने ज़रूर सोचा होगा, "यह भी क्या तुक है! अब मैं अपने बिल तक कैसे पहुँचूँगी?"

आख़िरकार हम झील के किनारे पहुँचे।

यहाँ 'सूर्योदय' नाम के सामूहिक फार्म का आखिरी खेत खत्म होता था, दूसरे किनारे 'लाल सुबह' नाम के सामूहिक फार्म के खेत शुरू होते थे।

जंगल के छोर पर लकड़ी के कुन्दों का बना हुआ एक मकान था। हमने एकदम समझ लिया कि यही चौकीदार दादा की बेटी वालेन्तीना और उसके बेटा फ़्योदोर का



घर होगा।

हम मकान की बाड़ तक गये जहाँ सूरजमुखी के लम्बे-लम्बे फूल मकान के इर्द-गिर्द सन्तरियों की तरह खड़े मानो पहरा दे रहे थे।

वालेन्तीना खुद बाग़ की तरफ़ मुँह किये बरसाती में खड़ी थी। वह लम्बी थी और उसके कन्धे चौड़े थे, ठीक अपने चौकीदार बाप की तरह। उसके नीले ब्लाउज़ का कालर खुला था। उसके एक हाथ में झाड़ू और दूसरे हाथ में धूल साफ़ करने का गीला झाड़न था।

"ओ फ्योदोर, शैतान कहीं के!" वह कड़े स्वर में चिल्लायी, "तुमने वह भूरा बरतन कहाँ रख दिया है?"

"वहाँ उधर," रसभरी की एक झाड़ी के नीचे से बड़ी गम्भीर आवाज़ में जवाब मिला। और फ्योदोर, जिसके बाल भुट्टे के बालों जैसे थे एक पानी के गढ़े की तरफ़ इशारा कर रहा था जिसमें छोटी-छोटी खपचियों और घास से भरा हुआ बरतन तैर रहा था।

"और छलनी कहाँ छुपा रखी है, बेशरम?"

"वह देखो, वहाँ," फ्योदोर की भारी गम्भीर आवाज़ आयी। और उसने छलनी की तरफ़ इशारा किया। उस पर एक पत्थर रखा था और कोई चीज़ उसके अन्दर हिल-डुल रही थी।

"चोर कहीं के, अब घर में घुसोगे तो इसी गीले झाड़न से तुम्हारी पीठ साफ़ करूँगी," वालेन्तीना धमकाते हुये बोली। तभी उसकी नज़र हम पर पड़ी और उसने अपना स्कर्ट ठीक कर लिया।

"नमस्कार," मैं बोला, "आपके पिताजी ने आपको प्यार कहलाया है।"

"धन्यवाद," वह बोली, "अन्दर आइये। बाग़ में थोड़ी देर आराम कीजिये।"

फाटक से हम अन्दर गये और पके हुये सेबों के एक पेड़ के नीचे लेट गये।

मुटकना फ्योदोर सिर्फ़ क़मीज़ पहने हुये था। उसकी गीली और कीचड़ से सनी हुई पतलून घास पर फैली थी।

"मैं रसभरियाँ खा रहा हूँ," वह गम्भीर आवाज़ में हमसे बोला। "रसभरी की दो झाड़ियाँ तो मैंने साफ़ कर दी हैं। अब तीसरी भी खा डालूँगा।"

"खाते चलो, पहलवान," मैं बोला, "ज़रा ध्यान रखना, पेट न फट जाये।"

जाते-जाते फ्योदोर रुक गया, हाथ से अपना पेट ठोंक-बजाकर देखा, क्रोध-भरी नज़र से मुझे घूरा और तेज़ी से अपनी पतलून उठाकर, मटकता हुआ वह घर की तरफ़ चला गया।

बहुत देर तक हम ख़ामोश लेटे रहे। मैंने सोचा, शायद स्वेत्लाना सो गयी है। लेकिन उसकी तरफ़ मुँह फेरा तो देखा कि वह सोयी नहीं है। साँस रोके वह एक चाँदी-सी सफ़ेद तितली को देख रही थी जो उसके गुलाबी फ्राक की आस्तीन पर चढ़ी चली आ रही थी।

अचानक आकाश एक ज़ोरदार गड़गड़ाहट से काँप उठा और एक चमकता हुआ हवाई जहाज़ तूफ़ान की तरह सेब के पेड़ों की फुनगियों के ऊपर से उड़कर निकल गया।

स्वेत्लाना चौंक गयी, तितली उड़ गयी, एक पीला मुर्गा बाड़ पर से कूदकर ज़मीन पर आ गया और घबराया हुआ एक कौआ काँव-काँव करता हुआ आसमान में उड़ गया। इसके बाद फिर सब कुछ शान्त हो गया।

"यह वही विमान-चालक है जो कल हमारे घर आया था," स्वेत्लाना ने नाराज़गी जताते हुये कहा।

"वही कैसे?" मैंने सिर उठाकर पूछा, "हो सकता है कि वह कोई दूसरा ही हवाई जहाज़ चलाने वाला हो..."

"नहीं यह वही है। मैंने खुद उसे माँ से यह कहते सुना था कि अगले दिन वह हमेशा के लिए दूर... बहुत दूर उड़कर चला जायेगा। मैं उस समय एक लाल टमाटर खा रही थी। माँ ने उससे कहा था, 'अलविदा! खुदा तुम्हारा भला करे!'" इसके बाद स्वेत्लाना मेरे पेट पर सवार हुई और बोली, "पिताजी, मुझे माँ के बारे में कुछ बताइये। जब मैं इस दुनिया में नहीं आयी थी तो क्या होता था?"

"होता क्या, वही होता था जो अब होता है, जैसा आज है। पहले दिन आता था और उसके बाद रात। फिर दिन निकल आता था, फिर रात होती..."

"और एक हज़ार दिन और!" स्वेत्लाना ने अधीर होकर टोका, "लेकिन मुझे बताइये कि उन दिनों क्या-क्या बातें होती थीं? आप खूब जानते हैं क्या हुआ, लेकिन, लेकिन बहाना यह करते हैं जैसे कुछ जानते ही नहीं।"

"अच्छा, बताता हूँ इसके बारे में। लेकिन पहले मेरे पेट पर से तो उतर जाओ, नहीं तो बोलना मुश्किल हो जायेगा। हाँ, अब सुनो। यह उन दिनों की बात है जब हमारी मारूस्या सत्रह साल की थी। ह्वाइट गार्ड फ़ौजों ने उसके क़स्बे पर क़ब्ज़ा कर लिया और उसके पिता को जेल में डाल दिया। उसकी माँ तो कई वर्ष पहले ही मर गयी थी। इसलिए हमारी मारूस्या बिल्कुल अकेली रह गयी थी..."

"हाय! मुझे माँ पर तरस आ रहा है!" स्वेत्लाना मेरे और भी नज़दीक खिसकते हुये बोली, "हाँ, उसके बाद क्या हुआ?"

"मारूस्या ने जल्दी से अपनी शाल कन्धे पर डाली और बाहर सड़क पर भाग निकली। वहाँ उसने देखा कि ह्वाइट गार्ड के सिपाही मज़दूरों और मज़दूर-औरतों को जेल ले जा रहे हैं। सीधी-सी बात है कि बुर्जुआ लोग अपने क़स्बे में ह्वाइट गार्ड देखकर बड़े खुश थे। उनके घर रोशनियों से जगमगा रहे थे। और गाना-बजाना भी हो रहा था वहाँ। बेचारी मारूस्या किसके पास जाती अपनी दुखभरी कहानी सुनाने..."

"हाय...हाय... मुझे बहुत ही दुख हो रहा है अपनी मारूस्या के लिए," स्वेत्लाना बात काटते हुये बोली। अब उससे न रहा गया। उसने कहा, "पिताजी, क़स्बे में लाल सेना के आने के बारे में जल्दी से बताना शुरू कीजिये।"

"हमारी मारूस्या क़स्बा छोड़कर आ गयी। आसमान पर चाँद चमक रहा था और ठण्डी हवा चल रही थी। जल्दी ही वह दूर-दूर तक फैले हुये सफ़ाचट मैदानों में आ पहुँची।"

"क्या वहाँ भेड़िये भी थे?"

"नहीं, भेड़िये नहीं थे। सारे भेड़िये बन्दूक़ों के चलने और गोलियों की आवाज़ें सुनकर दूर जंगलों में भाग गये थे। तब मारूस्या ने सोचा : 'इस लम्बे-चौड़े मैदान को पार करके मैं बेल्गोरोद नगर में जाऊँगी। वोरोशीलोव की लाल सेना वहीं ठहरी है। सुना है कि वह बड़ा बहादुर आदमी है। अगर मैं उसे अपनी कहानी सुनाऊँगी तो शायद वह मेरी सहायता करे।'

"लेकिन भोली मारूस्या यह नहीं जानती थी कि लाल सेना बिना कहे ही मदद करने आती है। यह सेना हर उस जगह बचाव के लिए खुद पहुँच जाती थी जहाँ ह्वाइट सेना मार-काट करने जाती थी। जहाँ मारूस्या खड़ी थी, उससे थोड़ी ही दूरी पर लाल गार्ड के दस्ते फैले-खुले मैदान को पार करते चले आ रहे थे। हर सिपाही की बन्दूक़

में पाँच-पाँच गोलियाँ भरी थीं और हर मशीनगन में दो सौ पचास गोलियाँ भरी थीं।

"मैं उस समय मैदान में घोड़े पर चढ़कर गश्त लगा रहा था। मैं सन्तरी की ड्यूटी पर था। अचानक ज़मीन पर एक छाया थरथरायी और एक टीले के पीछे ग़ायब हो गयी। 'अहा,' मैंने सोचा, 'ह्वाइट गार्ड का जासूस होगा। बच्चू, अब भागकर कहाँ जाओगे!'

"मैंने घोड़े को एड़ लगायी और तेज़ी से टीले के पीछे पहुँचा। और तुम जरा अन्दाज़ा लगाओ कि मुझे वहाँ क्या मिला? ह्वाइट गार्ड का जासूस? अरे नहीं! वह एक जवान लड़की थी जो दूधिया चाँदनी में खड़ी थी। उसका मुँह तो साये में था, लेकिन उसके बाल हवा में लहराते दिखायी दे रहे थे।

"मैं कूदकर घोड़े से नीचे उतर आया, लेकिन अपनी पिस्तौल तैयार रखी। शायद ज़रूरत पड़े, इसलिए। फिर मैंने पूछा : 'तुम कौन हो और आधी रात को इस लम्बे-चौड़े मैदान में क्यों मारी-मारी फिर रही हो?

"चाँद उस वक़्त बहुत ही बड़ा लग रहा था। चाँदनी में जब उस लड़की ने मेरी टोपी पर लाल सेना का सितारा चमकता देखा तो वह मुझसे लिपट गयी और फूट-फूटकर रोने लगी।

"यह है मारूस्या से मेरे मिलन की कहानी!

"उसी रात हमने ह्वाइट गार्ड के लुटेरों को उस क़स्बे से भगा दिया। हमने जेल के फाटक खोल दिये और वहाँ बन्द मज़दूरों को छोड़ दिया।

"लड़ाई के वक़्त मेरी छाती में एक गोली लगी और मुझे अस्पताल में भरती कर दिया गया। मेरा कन्धा भी दर्द कर रहा था क्योंकि छाती में गोली लगने पर जब मैं घोड़े से गिर पड़ा था तो मेरा कन्धा एक पत्थर से टकरा गया था।

"मेरी टुकड़ी का कमाण्डर मुझे देखने आया। वह बोला, 'अलविदा, हम जा रहे हैं ह्वाइट गार्ड का पीछा करने। यह लो तम्बाकू और थोड़ा-सा काग़ज़ तुम्हारे साथियों ने भेजा है। अब आराम से रहो, तुम जल्दी अच्छे हो जाओगे।'

"दिन ख़त्म हुआ और शाम आ गयी। मेरी छाती और कन्धा बहुत दुख रहा था। मैंने एकदम महसूस किया कि मैं बिल्कुल अकेला हूँ। इस अकेलेपन से मैं उदास हो उठा! प्यारी स्वेत्लाना, इस दुनिया में अगर साथी-संगी न हों तो सब कुछ फीका-सा लगता है।

"अचानक द्वार खुला और मारूस्या चुपचाप बिना आवाज़ किये अन्दर आ गयी।



उसे देखकर मैं इतना खुश हुआ कि मेरे मुँह से एक चीख़-सी निकल पड़ी।

"मारूस्या मेरे पास आकर बैठ गयी। वह अपना हाथ मेरे जलते हुए सर पर रखकर बोली, 'जब से लड़ाई बन्द हुई तब से मैं सारे दिन तुम्हें खोजती फिर रही थी। क्या बहुत दर्द हो रहा है, प्यारे?'

"'इसकी तुम जरा भी चिन्ता न करो, मारूस्या,' मैंने जवाब दिया, 'तुम इतनी पीली क्यों पड़ गयी हो?'

"'तुम सो जाओ,' मारूस्या बोली, 'चुपचाप, बिना किसी खटके के। मैं हर वक़्त तुम्हारे पास रहूँगी और तुम्हारी देखभाल करूँगी।'

"यह मेरा और मारूस्या का दूसरा मिलन था। और इसके बाद आज तक हम कभी अलग नहीं हुए।"

"पिताजी," स्वेत्लाना काँपती आवाज़ में बोली, "हमने हमेशा के लिए तो घर नहीं छोड़ा था न? देखिये, माँ हमें कितना प्यार करती है। हम कुछ देर और घूमेंगे और फिर हम वापस घर लौट चलेंगे ठीक है न?"

"तुम्हें कैसे मालूम कि वह हमको प्यार करती है? हो सकता है कि वह तुम्हें प्यार करती हो, लेकिन अब मुझे वह प्यार नहीं करती।"

"उँह, यह तो आप झूठ कह रहे हैं," स्वेत्लाना सिर हिलाकर बोली, "पिछली रात को जब मेरी आँख खुली तो मैंने देखा कि माँ ने अपनी किताब एक तरफ़ हटा दी और वह आपको बहुत देर तक देखती रही।"

"वाह, इससे क्या होता है। वह खिड़की से बाहर भी तो लोगों को देखती रहती है। देखने के लिए ही तो उसकी आँखें हैं।"

"नहीं, बिल्कुल नहीं," स्वेत्लाना दृढ़ स्वर में तमककर बोली, "जब वह खिड़की से बाहर देखा करती है तो बिल्कुल दूसरी बात होती है। ऐसे..."

स्वेत्लाना ने अपनी पतली भौंहों को ऊपर उठाया, सर को कन्धे की ओर झुका दिया और अपने होंठों को दबाकर उदासीन दृष्टि से एक पालतू मुर्गे को देखने लगी जो पास ही अकड़कर चल रहा था।

"लेकिन जब कोई किसी को प्यार से देखता है तो इस तरह नहीं देखता।"

अब स्वेत्लाना की नीली-नीली आँखों में चौंधियानेवाली चमक आ गयी, उसकी

झुकी पलकों में हल्का-सा कम्पन आ गया और वह अपनी माँ जैसी प्यार-भरी सोचती हुई नज़र से मेरे मुँह की तरफ़ देखने लगी।

"वाह री मेरी चितचोर मुन्नी," मैंने स्वेत्लाना को गोद में उठाकर कहा, "कल जब तुमने स्याही गिरा दी थी तो कैसे देखा था मुझको?"

"तो आपने मुझे कमरे से निकाल बाहर क्यों किया था? और जो निकाल बाहर किये जाते हैं वे हमेशा गुस्से की नज़र से देखते हैं।"

हमने तो वह नीला प्याला नहीं तोड़ा था। हो सकता है कि मारूस्या ने खुद तोड़ा हो। खैर, हमने उसको माफ़ कर दिया था। कभी-कभी ऐसा होता है कि लोग यूँ ही किसी के बारे में बुरा सोचते हैं। स्वेत्लाना ने एक बार मेरे बारे में बुरा सोचा था। और मैंने भी क्या मारूस्या के बारे में बुरा नहीं सोचा?... मैंने जल्दी से वालेन्तीना को खोज निकाला और उससे अपने घर जाने का कोई छोटा रास्ता पूछा।

"मेरा घरवाला थोड़ी ही देर में घोड़ागाड़ी लेकर स्टेशन जा रहा है," वालेन्तीना बोली, "वह पनचक्की तक आपको ले जायेगा। वहाँ से आपको थोड़ा ही चलना पड़ेगा।"

बाग़ में लौटने पर स्वेत्लाना मुझे बरसाती के पास ही मिली। वह बहुत सकुचायी-सी थी।

"पिताजी," वह बड़ी धीमी और राज-भरी आवाज़ में बोली, "वह छोटा फ़्योदोर अभी-अभी रसभरी की झाड़ियों से निकला है और अब वह आपके थैले से नानखताइयाँ चुरा रहा है।"

हम सेब के पेड़ के पास गये, लेकिन चालाक फ़्योदोर ने हमको देख ही लिया। वह बाड़ के पास ही उगी हुई घनी झाड़ियों में छुप गया।

"फ़्योदोर," मैंने फिर पुकारा, "यहाँ आओ। मैं तुम्हें सारी नानखताइयाँ दे दूँगा।"

अब झाड़ियों में हलचल होनी बन्द हुई और वहाँ से हाँफने की आवाज़-सी आने लगी।

आख़िरकार उसकी गुस्से-भरी आवाज़ आयी, "मैं यहाँ पतलून पहने बिना खड़ा हूँ और चारों तरफ़ बिच्छूबूटियाँ हैं..."

तब मैं झाड़ियों में ऐसे घुसा जैसे जंगल में हाथी। मैंने डरावने फ़्योदोर को वहाँ से निकाला और अपने थैले की सभी बाक़ी नानखताइयाँ उसके आगे उँड़ेल दीं।

उसने बड़े इत्मीनान से सारी नानखताइयाँ क़मीज़ के पल्ले में भर लीं, धन्यवाद तक न कहा और अकड़कर बाग़ के दूसरे सिरे पर जा पहुँचा।

"उफ़! कितना घमण्डी है," स्वेत्लाना झुँझलाकर बोली, "अपनी पतलून तक उतार दी है और देखो बादशाह की तरह अकड़कर चलता है।"

दो घोड़ोंवाली गाड़ी मकान के सामने आ खड़ी हुई और वालेन्तीना बरसाती में निकल आयी। बोली :

"लीजिये, आ गयी गाड़ी। इसके घोड़े बड़े अच्छे हैं। चुटकी बजाते आपको पनचक्की तक पहुँचा देंगे।"

फ़्योदोर फिर आ पहुँचा। लेकिन इस बार पतलून पहने था। वह हमारी तरफ़ तेज़ी से भागा आ रहा था और एक धुएँ के रंग की बिल्ली के बच्चे को गर्दन से घसीटता ला रहा था। ऐसा लगता था कि बिल्ली का बच्चा इस बर्ताव का आदी हो गया था, क्योंकि वह न तो कुलबुला ही रहा था और न म्याऊँ-म्याऊँ ही कर रहा था। वह केवल अधीर होकर अपनी नरम रोयेंदार छोटी दुम हिला रहा था।

"इसको ले लो," फ़्योदोर बोला। उसने बिल्ली के बच्चे को स्वेत्लाना के हाथों में ठूँस दिया।

"क्या यह मेरा ही रहेगा हमेशा के लिए?" स्वेत्लाना ने खुश होकर पूछा। उसने मेरी ओर भी झिझकते हुए देखा।

"हाँ, तुम इसको रखो अगर तुम्हें अच्छा लगे," वालेन्तीना बोली, "हमारे यहाँ तो ऐसे कितने ही हैं। अच्छा, फ़्योदोर, अब तुम यह बताओ कि तुमने नानखताइयाँ गोभी की क्यारी में क्यों छुपा दीं? मैं खिड़की से सब देख रही थी।"

"अच्छा, मैं जाकर उनको और दूर किसी दूसरी अच्छी जगह छुपा दूँगा," फ़्योदोर ने जवाब दिया। और वह भालू के बच्चे की तरह झूमता हुआ चला गया।

"बिल्कुल अपने नाना जैसा है," वालेन्तीना मुस्कुराकर बोली, "इतना हट्टा-कट्टा लगता है, लेकिन अभी सिर्फ़ चार साल का है।"

चौड़ी हमवार सड़क पर हम गाड़ी में जा रहे थे। शाम हो रही थी। दिन का काम करके लोग अपने घरों को जो रहे थे। वे थके-माँदे लेकिन खुश थे।

सामूहिक फ़ार्म की एक ट्रक घरघराती हुई गराज में चली गयी।

दूर खेत में फ़ौजी बिगुल बज उठा।

गाँव का घड़ियाल टनटनाया।

एक रेलगाड़ी का इंजन टू-टू करता हुआ जंगल के उस तरफ़ चला गया। पहियो, घूमते रहो, गाड़ियो, दौड़ती रहो। रेल की पटरियाँ बहुत-बहुत दूर तक बिछी हुई हैं।

बिल्ली के रोयेंदार बच्चे को जोर से अपनी छाती से चिपटाते हुये स्वेत्लाना खुश होकर पहियों की चर्र-मर्र की ताल पर यह गीत गाने लगी :

हें... हें...
वे आ रहे हैं!
छोटे-छोटे चूहे
उनकी दुम भी छोटी-छोटी
और आँखें भरी शरारत से,
वे रेंग रहे हैं हर जगह।
वे रेंग रहे हैं ताक़ पर
ठक!... ठक!...
प्याला ख़त्म!
और इसके लिए कौन ज़िम्मेदार?
हम तो नहीं!
हाँ, वे छोटे-छोटे चूहे
काले-काले बिलों में रहने वाले।
छोटे-छोटे चूहो, नमस्कार!
हम वापस आ गये।
और अब बताओ तो
हम क्या साथ लाये हैं?
म्याऊँ-म्याऊँ करता यह
और दूध पीता यह तश्तरी से.
अब ख़ैर इसी में है
तुम छुप जाओ अपने बिल में,



काले छोटे बिल में,
नहीं तो काटे जाओगे।
टुकड़े-टुकड़े हो जाओगे,
दस टुकड़े हो जायेंगे,
बीस टुकड़े हो जायेंगे,
दस करोड़ टुकड़े हो जायेंगे।

गाड़ी पनचक्की के सामने रुकी और हम कूदकर उतर आये।

पाश्का बुकामाश्किन, सान्का, बेर्था और कई दूसरे बच्चों की आवाज़ें आ रही थीं जो चहारदीवारी के पीछे गुल्ली-डण्डा खेल रहे थे।

"झूठमूठ मत खेलो," सान्का बेर्था से चिल्लाकर कह रहा था, "तुम लोगों ने तो मुझ पर बेईमानी करने का आरोप लगाया था और अब खुद एक क़दम उठाने के बजाय दो क़दम बढ़ आये हो।"

"फिर कुछ गड़बड़ हो रही है," स्वेत्लाना ने समझाया, "मेरा ख्याल है कि वे फिर झगड़ा करेंगे।" तब उदास-सी होकर वह बोली, "लेकिन इसके बिना कोई चारा ही नहीं। यह खेल ही ऐसा है।"

जब हम अपने घर के नज़दीक पहुँचे, हमारे अन्दर एक अजीब-सी हलचल मच गयी। एक नुक्कड़ पर मुड़ना और एक टीले को लाँघना ही बाक़ी रह गया था।

अचानक हम ठिठककर एक-दूसरे को देखने लगे। हमें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं आ रहा था।

हमें अपने घर की भूरी छत यहाँ से दिखाई दे रही थी। हाँ, अभी उसकी टूटी-फूटी बाड़ और ऊँची बरसाती दिखाई नहीं दे रही थी। अब देखो, वह हमारी सुन्दर, चमकती हुई फिरकी जो हवा में तेज़ी से घूम रही है।

"माँ तो छत पर खुद बैठी हुई है," स्वेत्लाना मेरी आस्तीन खींचकर चिल्लायी।

हमने टीला भी पार कर लिया।

शाम के सूरज की सुनहरी किरणों से हमारे घर की बरसाती चमक रही थी। लाल फ्राक पहने और अपने नंगे पाँवों में सैण्डल डाले हमारी मारूस्या वहाँ खड़ी थी। वह मुस्कुरा रही थी।

"हँसो, ज़ोर-ज़ोर से हँसो," मारूस्या की ओर दौड़ती हुई स्वेत्लाना चिल्लायी, "लेकिन हमने अब तुम्हें माफ़ कर दिया!"

मैं भी मारूस्या के पास पहुँचा और उसको घूरने लगा।

मारूस्या की आँखों में एक अजीब कोमल चमक थी। हम समझ गये कि वह बहुत देर से हमारा इन्तज़ार कर रही है। और वह बहुत खुश है कि हम घर लौट आये हैं।

"नहीं," मैंने नीले प्याले के टुकड़ों को लात मारते हुए मन ही मन सोचा, "उन दुष्ट भूरे चूहों ने इसको तोड़ा है। हमने नहीं तोड़ा। और न ही मारूस्या ने ही कुछ तोड़ा है।"

फिर रात आयी चाँद और तारों को लेकर।

हम तीनों अपने बाग़ में पकी हुई चेरी के पेड़ के नीचे बहुत देर तक बैठे रहे। मारूस्या ने हमें सब कुछ बताया – वह कहाँ-कहाँ गयी थी, उसने क्या-क्या किया था और क्या देखा था।

स्वेत्लाना तो आधी रात तक अपनी कहानी कहती रहती। लेकिन मारूस्या को समय का ध्यान आया और उसने स्वेत्लाना को सोने के लिए भेज दिया।

"हाँ, अब बताइये, पिताजी," शैतान स्वेत्लाना ने ऊँघते हुये बिल्ली के बच्चे को अपने साथ ले जाते हुये पूछा, "क्या हमारी ज़िन्दगी अब दुखी है?"

हम खड़े हो गये।

एक दूधिया चाँद हमारे बाग़ के ऊपर चमक रहा था।

कहीं दूर एक रेलगाड़ी गड़गड़ाती हुई उत्तर की ओर जा रही थी।

रात के वक़्त कोई हवाई जहाज़ चलाने वाला तेज़ी से उड़ता हुआ हमारे सिरों के ऊपर से गुज़रा और बादलों में ग़ायब हो गया।

और सचमुच, साथियो, ज़िन्दगी खूबसूरत थी!

• • •

अनुराग ट्रस्ट